Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

शिवपुराण में वर्णित ब्रह्म का स्वरूप

शैलेश कुमार शुक्ल
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
(सम्बद्ध इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज)

Article Info
Volume 6, Issue 6

Page Number : 24-31

Publication Issue :
November-December-2023

Article History
Accepted : 10 Nov 2023
Published : 30 Nov 2023

सारांश –ब्रह्म इस जगत् के उत्पत्ति, स्थिति और लय का सर्वज्ञ और शक्तिमान कारण है। वह नित्य तत्त्व है एवं सर्वत्र व्याप्त है। वह कभी कल्पना में भी नष्ट नहीं होता है तथा सभी दृष्ट, अदृष्ट में व्याप्त है। अतः ब्रह्म व्याप्ति की भावना का पोषक है। समस्त गवेषणाएँ उसे देखने, सुनने व पकड़ने में असफल रही हैं। अन्ततः उसे अदृश्य, अग्राह्य, निर्गुण, निष्कल, अव्यक्त इत्यादि नाम देते हुए, वाणी तथा समस्त इन्द्रियों का अविषय, उसका वर्णन करने में सामर्थ्य न होने से यह सदैव 'जिज्ञासा' का प्रश्न बना रहा है। शिवपुराण में भगवान् शिव को ही परब्रह्म के रूप में दिखाया गया है और उनके अनेक रूपों, अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्तों और भक्ति का विस्तार से वर्णन किया गया है। शिव के जगत् सम्बन्धी पंचकृत्य (सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव, अनुग्रह) नित्य सिद्ध हैं। यही प्रकृत विषय में वर्णित किया गया है।

मुख्य शब्द–ब्रह्म, हिरण्यगर्भ, सृष्टि, अन्तर्हित, मायाशक्ति, प्रकृति, निराकार, अध्यात्म।

संस्कृत वाङ्मय विविध ज्ञान–विज्ञानों के आकर स्वरूप प्रतिष्ठित हैं, इसलिए इनके अन्वेषण की अति आवश्यकता है। ज्ञान परम्परा की दृष्टि से भारत अध्यात्म एवं विज्ञान का पुण्य स्थल रहा है। चार वेद, षड्वेदांग, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा एवं पुराण–इन चौदह विद्याओं का संकलन संस्कृत भाषा में ही है। पुराण, समस्त वेद व उपनिषद् आदि का सारगर्भित व्याख्या संग्रह है। पुराण शब्द की व्युत्पत्ति– **''पुरा भवं पुराणम्''** अर्थात् ''पुरानी घटना जिस ग्रन्थ में संकलित किया गया हो।'' पुराणों की कुल संख्या अष्टादश (18) है। इसके अतिरिक्त अष्टादश (18) उपपुराण एवं अष्टादश (18) अतिपुराण की भी गणना प्राप्त होती है। एक प्रसिद्ध श्लोक से अष्टादश पुराणों के प्रथम अक्षर से इनकी गणना की गई है–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि, पुराणानि प्रचक्षते।।[1]

विष्णु एवं भागवतपुराण में पुराणों का क्रम इस प्रकार है–

(1) ब्रह्म (2) पद्म (3) विष्णु (4) शिव (5) भागवत (6) नारदीय (7) मार्कण्डेय (8) अग्नि (9) भविष्य (10) ब्रह्मवैवर्त (11) लिंग (12) वराह (13) स्कन्द (14) वामन (15) कूर्म (16) मत्स्य (17) गरूड एवं (18) ब्रह्माण्ड पुराण।

विष्णु पुराणादि में प्रतिपाद्य विषयों के आधार पर पुराण का लक्षण इस प्रकार किया गया है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।[2]

वंशानुचरितं चेति पुराणं पंचलक्षणम्।।

पुराण में सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित इन पाँच विषयों का विस्तारपूर्वक उल्लेख होता है।

अष्टादश पुराणों में शिवपुराण को विद्वत्जनों ने चतुर्थ पुराण के रूप में परिगणित किया है, विष्णु पुराण में भी शिवपुराण की गणना चतुर्थ स्थान पर की गयी है। शिवपुराण में शिव को ब्रह्मस्वरूप बताया गया है, इसमें शिव के कल्याणकारी स्वरूप का तात्त्विक विवेचन रहस्य महिमा और उपासना का विस्तृत वर्णन है। त्रिदेवों में भगवान् शिव ही सर्वश्रेष्ठ हैं। अतः इन्हें महादेव की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है। इसमें किंचित् मात्र भी सन्देह नहीं है। शैव मतावलम्बी इस पुराण को ''शैव भागवत'' नाम से जानते हैं। ब्रह्मा, विष्णु जैसे देवों ने भी तपस्या करके शिव के कृपापात्र हुए, जो श्रुतियों में महादेव, महेश्वर, महेशान और आशुतोष आदि अनेक नामों से पुकारे जाते हैं। शिव ही परात्पर हैं, परम कारण हैं। उपनिषदों में भी शिवजी की सर्वश्रेष्ठता को प्रमाणित किया गया है–

यो देवानां प्रभवश्वोद्भश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः।[3]

हिरण्यगर्भ पश्यत जायमानं, स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु।।

जो देवताओं की उत्पत्ति करने वाला है, ऐश्वर्य देने वाला है, जगत् में श्रेष्ठ है, उस महर्षि रुद्र ने उत्पन्न होते हुए हिरण्यगर्भ को देखा। वही हमको सद्बुद्धि से सम्पन्न करे।

वर्तमान शिवपुराण नैमिषारण्य में उपस्थित महर्षि व्यास तथा अन्य ऋषियों को सनत्कुमार के मुखारविन्दों से सुनायी गयी कथा है। शिवपुराण एक अर्वाचीन रचना है, अतः शैव मतानुयायियों के लिये यह नियमों एवं स्तुतियों का ग्रन्थ माना जाता है। शिवपुराण में श्लोकों की संख्या चतुर्विंशसहस्त्र (24000) है। वेद तुल्य यह शिव पुराण सात संहिताओं में विभक्त है। (1) विद्येश्वर संहिता (2) रुद्र संहिता (3) शत्रुद्र संहिता (4) कोटिरुद्र संहिता (5) उमा संहिता (6) कैलाश संहिता (7) वायवीय संहिता।

श्रुति साहित्य एवं भारतीय दर्शन में ब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन विविध प्रकार से किया गया है। शिवमहापुराण में शिव को ही ब्रह्मस्वरूप बताया गया है। ब्रह्म शब्द की व्युत्पत्ति शब्दकल्पद्रुम के अनुसार– **बृहति वर्द्धते निरतिशय– महत्वलक्षणबुद्विमान्।[4]** बृह् धातु से अतिशय संवर्धन अर्थ में ब्रह्म कहा गया है।

ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य में ब्रह्म की व्याख्या इस प्रकार किया गया है– **''ब्रह्मशब्दस्य व्युत्पाद्यमानस्य नित्यशुद्धत्वादयोऽर्थाः प्रतीयन्ते बृहतेर्धातोरर्था– नुगमात्''।[5]** अर्थात् नित्यशुद्ध एवं बृहत्तम होने के कारण इसे ब्रह्म कहा गया है।

छान्दोग्योपनिषद् में ब्रह्म के विषय में कहा गया है– **''सर्वं खल्विदं ब्रह्म''[6]** इस भाव को प्राप्त होने वाला पुरुष–**''तरतिशोकमात्मविद्''[7]** अर्थात् सम्पूर्ण जगत् में निश्चय ही ब्रह्म विद्यमान है और सभी पदार्थों में ब्रह्म को देखने वाला आत्मज्ञानी शोक को पार करके मोक्ष को प्राप्त होता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में ब्रह्मस्वरूप को इस प्रकार प्रतिपादित किया गया है–

परमात्मा स्वरूपं च पर ब्रह्म सनातनम्।[8]

सर्वदेहस्थितं साक्षिस्वरूपं देहि कर्मणाम्।।

अर्थात् परमात्मा का स्वरूप सनातनपरब्रह्म है जो कि सबके देहों में स्थित रहता है। वही कर्मों का साक्षी रूप है।

श्रीमद्भागवतपुराण में ब्रह्म के स्वरूप को इस प्रकार बताया गया है–

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्,[9]

तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।

तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा,

धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।।

अर्थात् जिससे जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलय होता है, वही सद्रूप सभी पदार्थों में अनुगत है, असत् पदार्थ से पृथक है, जड़ नहीं, चेतन है। परतन्त्र नहीं, स्वतन्त्र स्वयं प्रकाशित है। जो ब्रह्म अथवा हिरण्यगर्भ नहीं, प्रत्युत उन्हें अपने संकल्प से ही वेदज्ञान का दान किया है, जिसके विषय में विद्वत्–जन भी मोहित हो जाते है।

शिवपुराण में आदिस्वरूप शिव को ब्रह्म के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वेद एवं उपनिषदों की भाषा क्लिष्ट होने के कारण अध्यात्म एवं दर्शन का अनुशीलन कठिन होने लगा, अतः भारतीय मनीषियों ने आम जनमानस में अध्यात्म के लिए पुराणों का सहारा लिया। निराकार स्वरूप और साकार स्वरूप के तादात्म्य को स्थापित किया। शिवपुराण में शिव के दो स्वरूपों को इस प्रकार वर्णित किया गया है –

शिवैको ब्रह्मरूपत्वान्निष्कलः परिकीर्तितः।।[10]

रूपित्वात् सकलस्तद्वत्तस्मात् सकलनिष्कलः।।[11]

निष्कलत्वान्निराकारं लिंगं तस्य समागतम्।।

एक मात्र भगवान् शिव ही ब्रह्म रूप होने के कारण निष्कल (निराकार) कहे गये हैं। निराकार का व्युत्पत्तिधायक अर्थ– ''निर्गतः आकारः यस्मिन् सः निराकारः'' अर्थात् जिससे आकारवान् समस्त चराचर उत्पन्न हुए हैं, उसे निराकार कहते हैं। शिव उसी अपने आदिरूप अथवा प्रथमस्वरूप निराकार लिंगरूप में साक्षात् ब्रह्म कहे गये हैं। दूसरा रूप सकल (साकार) रूप जिससे मूर्तिमान रूप में शिव ईश्वरत्व को प्राप्त होकर महेश्वर रूप को धारण किये हैं। निष्कल रूप से समस्त जगत् की सृष्टि मानी जाती है अर्थात् लिंग रूप के द्वारा ही सृष्टि की सम्भावना की गयी है। शिव के अतिरिक्त अन्य देवों को साक्षात् ब्रह्म नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि ब्रह्म का स्वरूप निराकार माना गया है। अन्य देवों की कल्पना उनके विग्रह स्वरूप से ही किया गया है किन्तु शिव दोनों स्वरूपों में विद्यमान हैं। शिव अपने निष्कल स्वरूप को प्रकाशित करने के लिए साक्षात् जगदीश्वर रूप में प्रकट हुए हैं–

तस्मादज्ञातमीशत्वं व्यक्तं द्योतयितुं हि वाम्।[12]

सकलोऽहमतो जातः साक्षादीशस्तु तत्क्षणात्।।

शिव ही ब्रह्म हैं, उससे सृष्टि संचालित होती है। वही निराकार हैं, वही अपने अनुग्रह आदि से जीवों पर दया करते हैं। शिव सर्वत्र समान रूप से व्यापक होने के कारण समस्त प्राणियों के आत्मा हैं। जगत् की सदा वृद्धि करने के कारण ब्रह्म कहा गया है–

अहमेव परं ब्रह्म मत्स्वरूपं कलाकलम्।[13]

ब्रह्मत्वादीश्वरश्चाहं कृत्यं मेऽनुग्रहादिकम्।।

बृहत्त्वाद बृंहणत्वाच्च ब्रह्माहं ब्रह्मकेशवौ।[14]

समत्त्वाद्व्यापकत्वाच्च तथैवात्माहमर्भकौ।।

निष्कल रूप शिव के सूक्ष्मता के कारण उनके विषय में जानना एवं समझना दुर्लभ कार्य था। अतः शिव ने उस सूक्ष्म शरीर से स्वयम्भू रूप में स्थूल जगत् को प्रकट किया। इसलिए शिव के पाँच कृत्य लौकिक जगत् में नित्य सिद्ध हैं–सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव एवं अनुग्रह। यही शिव का जगत् सम्बन्धी पाँच कृत्यों में विभक्त एक मात्र कार्य है–

सृष्टिः स्थितिश्च संहारस्तिरोभावोऽप्यनुग्रहः।[15]

पंचैव मे जगत्कृत्यं नित्यसिद्धमजाच्युतौ।।

यह पंचकृत्य एक मात्र शिव का कार्य है। यह जगत् में जीवों पर अनुग्रह करने मात्र के लिए क्रियान्वित किया जाता है। सृष्टि का तात्पर्य स्थूल जगत् की संकल्पना करना अर्थात् आरम्भ जिसे ''सर्ग'' कहते हैं। सृष्टि के पश्चात् सुव्यवस्थित संचालन करना जीवों का भरण–पोषण करना ''स्थिति'' है। समस्त जगत् का लय होना ही ''संहार'' है। प्राणों का उत्क्रमण ''तिरोभाव'' है। इस चराचर जगत् में आवागमन से मुक्ति मिलना ''अनुग्रह'' है। मुक्ति अथवा अनुग्रह को भारतीय आस्तिक एवं नास्तिक दोनों दर्शनों में परिणाम माना जाता है।

शिव का एक मात्र लौकिक जगत् का कार्य पंचकृत्यों वाला नित्य शाश्वत प्रक्रिया है। इसलिए सृष्टि के पूर्व जगत् के अभाव में क्या था? जिससे सृष्टि की प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। उस अभाव रूप को शिव पुराण में वर्णित किया गया है। प्रलय के कारण दृष्ट एवं अदृष्ट वस्तुओं का लय हो गया था, शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गन्ध ये पंच तन्मात्राएँ अपने–अपने महाभूतों से विरत होकर भावहीन हो गये, संसार में सब वस्तुएँ तेजहीन हो गयी, रात्रि एवं दिन का अभाव हो गया, सब ओर घोर अन्धकार व्याप्त था। उस समय किसी की सत्ता नहीं विद्यमान थी। चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र इत्यादि समस्त वस्तुओं का अभाव था।

अचन्द्रमनहोरात्रमनग्न्यनिलभूजलम्।[16]

अप्रधानं वियच्छून्यमन्यतेजोविवर्जितम्।।

अदृष्टत्वादिरहितं शब्दस्पर्शसमुज्झितम्।[17]

अव्यक्तगन्धरूपं च रसत्यक्तमदिङ्मुखम्।।

उस अवस्था में जो विद्यमान था, उस समय जो 'सत्' रूप में सुना जाता था। वही ''तत्सद्ब्रह्म'' एक मात्र शेष था–

इत्थं सत्यन्धतमसे सूचीभेद्ये निरन्तरे।18

तत्सद्ब्रह्मेति यच्छ्रुत्वा सदेकं प्रतिपद्यते।।

इस समस्त घोर अन्धकार का नाश करके तत्सद्ब्रह्म ने सृष्टि का निर्माण किया, ऐसा योगीजन के द्वारा अन्तर्हित हृदयाकाश से अनुभूत किया गया, उस ब्रह्म के विषय में जिसने संसार को प्रकट किया–

योगिनोऽन्तर्हिताकाशे यत्पश्यन्ति निरन्तरम्।।[19]

शिवपुराण में सृष्टि प्रक्रिया का सिद्धान्त भारतीय षड्दर्शन के सांख्य व योग दर्शन के सृष्टि प्रक्रिया से पूर्णतः साम्य रखता है। रुद्र संहिता के सृष्टि खण्ड में स्वयम्भू शिवोक्त सृष्टि प्रक्रिया इस प्रकार है–सर्वप्रथम प्रकृति उत्पन्न हुई, उससे महत्तत्व प्रकट हुआ, महत् से त्रिगुण सत्वादि से युक्त अहंकार उत्पन्न हुआ। यह अहंकार त्रिविध है। अहंकार से पंचतन्मात्राएँ एवं पंच–महाभूत उत्पन्न हुए। इसके अतिरिक्त एकादशेन्द्रियों का प्रादुर्भाव हुआ। इस तरह प्रकृति से ही चतुर्विंश तत्त्वों का प्रादुर्भाव हुआ–

प्रकृतेश्च महानासीन्महतश्च गुणास्त्रयः।[20]

अहंकारस्ततो जातस्त्रिविधो गुण भेदतः।।

तन्मात्रश्च ततो जाताः पञ्च भूतानि वै ततः।[21]

तदैव तानीन्द्रियाणि ज्ञानकर्ममयानि च।।

इन चौबीस तत्वों के संरचना में पुरुष के संयेाग से स्थल में चेतना का संचार होता है। उस चेतना के माध्यम से शरीर क्रियाशील हो जाती है। इन चौबीस तत्वों से प्राणी के शरीर का निर्माण होता है। इस निर्मित शरीर में चेतना के कारण क्रोध, भयादि षड्गुणों की सृष्टि हुई है।

नित्यं तेष्वणवो बद्धाः सृष्टाः क्रोधभयादयः।[22]

प्रभावाच्च भवानंगान्यनेकानीह लीलया।।

शिवपुराण में दार्शनिक क्लिष्टता को सुगम बनाने के कारण दर्शन की अपेक्षा आध्यात्मिक सन्दर्भों को अधिक विस्तारित किया गया है। जिस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने विराट्स्वरूप तथा अपने समस्त प्रभाव द्वारा जीव–जगत् की रक्षा करने का नाद करते हैं–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।[23]

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

उसी प्रकार ब्रह्मस्वरूप शिव भी शिवपुराण में समस्त भौतिक जगत् को लीला बताते हैं। शरणागत जीव की दुःखों से रक्षा करते हैं। जिससे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है–

अहं त्वां सर्वदुःखेभ्यो रक्षिष्यामि न संशयः।[24]

शिवोक्त सृष्टि प्रक्रिया को सांख्य दर्शन के आधार एवं प्रकरण ग्रन्थ सांख्यकारिका में विस्तृत रूप से प्रतिपादित किया गया है। प्रकृति से महत्, महत् से अहंकार त्रिविध गुणों से युक्त होकर उत्पन्न हुआ। सत्वगुण से वैकृत संज्ञक अहंकार, जिससे एकादशेन्द्रियों की उत्पत्ति होती है। तमोगुण से पंचतन्मात्राओं की उत्पत्ति हुई। सत्त्व एवं तमोगुण निष्क्रिय होने के कारण तैजस संज्ञक रजोगुण की चंचलता से एकादशेन्द्रियों एवं पंचतन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है–

सात्त्विक एकादशकः प्रवर्त्तते वैकृतादहंकारात्।[25]

भूतादेस्तन्मात्रः स तामसः तैजसादुभयम्।।

इस प्रकार शिवपुराण की सृष्टि प्रक्रिया में सांख्य व योग का समावेश है। इसके अतिरिक्त गुण विवेचन में वेदान्त का स्वरूप दिखाई पड़ता है। शिव के निष्कल एवं सकल रूप को वेदान्त दर्शन के माध्यम से ही निरूपित किया गया है, ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

शिवपुराण में वर्णित निराकार शिव को सत्य, ज्ञानवान्, अनन्त, परमानन्दमय, परमज्योतिस्वरूप कहा गया है। उस अद्वितीय शिव के शान्त– स्वरूप के इच्छा द्वारा द्वितीय साकार रूप प्रकट हुआ, जिसे मूर्तिमान स्वरूप कहा गया। इच्छा मात्र से उत्पन्न होने के कारण स्वयम्भू शिव कहे गये–

परिकल्प्येति तां मूर्तिमैश्वरीं शुद्धरूपिणीम्।[26]

अद्वितीयमनाद्यन्तं सर्वाभासं चिदात्मकम्।

अन्तर्दधे पराख्यं यद् ब्रह्म सर्वगमव्ययम्।।[27]

अमूर्ते यत्पराख्यं वै तस्य मूर्तिः सदाशिवः।

अर्वाचीनाः पराचीना ईश्वरं तं जगुर्बुधाः।।[28]

अर्थात् उस ब्रह्मस्वरूप शिव शुद्ध रूप से ईश्वरमूर्ति की कल्पना करके अद्वितीय, अनादि, अनन्त, सर्वप्रकाशक, चिन्मय, सर्वव्यापी और अविनाशी उसमें अन्तर्हित हो गया। जो मूर्ति ब्रह्म रूप है, उसी मूर्ति को भगवान् सदाशिव कहा गया है, वह मूर्ति सर्व प्राचीन है, विद्वत्जन उस मूर्ति को ईश्वर के रूप में मानते हैं। उस सदाशिव ने जगत् सृष्टि के पश्चात् अपने नाना स्वरूप के छटा को प्रदर्शित किया है, शिव ने सृष्टि के संचालन एवं स्थिति के लिए अपने विग्रह से स्वयं उद्भूत होने वाली श्रेष्ठ शक्ति को प्रकट किया जो शिव के अंग से नित्य लिप्त रहने वाली शक्ति कही गयी है–

शक्तिस्तदैकलेनापि स्वैरं विहरता तनुः।[29]

स्वविग्रहात्स्वयं सृष्टा स्वशरीरानपायिनी।।

शिव के इस माया शक्ति को प्रधान प्रकृति गुणवती, माया एवं बुद्धितत्त्व की जननी कहा गया है। यह माया शक्ति विकार रहित है।

शिव पुराण में जिस माया शक्ति का निरूपण किया गया है, उस माया शक्ति को पुराणों एवं लोकमत में शक्तिस्वरूप देवी भगवती के रूप में जाना गया है। शिव के अंग में लिप्त होने के कारण उस शक्तिस्वरूप देवी को अर्धनारीश्वर भगवान् की कल्पना का स्रोत माना जाता है। देवी भगवती की अष्टभुजा एवम् उनकी मुखाकृति की जो कल्पना की जाती है, वही वर्णन शिवपुराण में अक्षरशः माया शक्ति के विषय में किया गया है–

अस्या अष्टौ भुजाश्चासन्विचित्रवदना शुभा।[30]

राकाचन्द्रसहस्त्रस्य वदनेभावश्च नित्यशः।।

यह मायाशक्ति समस्त जगत् के रक्षण हेतु उत्पन्न हुई है। यह मातृस्वरूप होने के कारण समस्त कार्यों का कारण, अर्थात् माया के कारण अनेक दिखने वाले जन्म का एकमात्र यही शक्ति ही योनि है और यह नित्य उद्यमशील रहती है–

अचिन्त्यतेजसा युक्ता सर्वयोनिः समुद्यता।[31]

एकाकिनी यदा माया संयोगाच्चाप्यनेकिका।।

मायाशक्ति के अतिरिक्त जो शिवरूप है, उन्हें परमपुरुष, ईश्वर, शम्भु और अनीश्वर कहते हैं। वे अपने मस्तक पर आकाशगंगा को धारण करते हैं। शिव को पंचमुखी, प्रसन्नात्मा, दस भुजाओं वाला, त्रिशूलधारी, त्रिलोचन भी कहा जाता है। शिव का अंग कर्पूर के समान गौर वर्ण वाला है–

परः पुमानीश्वरः स शिवः शम्भुरनीश्वरः।[32]

शीर्षे मन्दाकिनीधारी भालचन्द्रस्त्रिलोचनः।।

पंचवक्त्रः प्रसन्नात्मा दशबाहुस्त्रिशूलधृक्।[33]

कर्पूरगौरसुसितो भस्मोद्धूलित विग्रहः।।

ईश्वर शिव के शक्ति एवं शिवरूप दो स्वरूपों के अतिरिक्त शिव पुराण में शब्द ब्रह्म का भी वर्णन प्राप्त होता है, जो शब्दरूप में सृष्टि के आदि में नाद शब्दरूप में प्रकट हुआ, जो निरन्तर ध्वनित होने के कारण प्लुत स्वर में सुना जा सकने वाला उच्चारण है। यह ध्वनि शिव के द्वारा प्रकट हुआ है। इस अक्षर को विद्वत्जन ने ''ओ3म्'' रूप में जाना–

ओमोमिति सुरश्रेष्ठात्सुव्यक्तः प्लुतलक्षणः।[34]

इस एकाक्षर अर्थात् ओ3म् को श्रुतियों में ब्रह्म के रूप में परमतत्त्व, ज्ञानस्वरूप के रूप में प्रतिपादित किया गया है। कठोपनिषद् में यम–नचिकेता संवाद में ब्रह्म के रूप में एकाक्षर के रूप में यम ने ओम् को बताया है–

सर्वे वेदा यत् पदमामनन्ति तपाँसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।[35]

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।।

इस एकाक्षर से ब्रह्माण्ड गुंजायमान् है। शब्द ब्रह्म जिसे ओ3म् कहा गया है, इसके द्वारा ही ब्रह्म प्राप्ति सम्भव है अर्थात् एकाक्षर परमसत्ता का एक मात्र कारण है । ओंकार के माहात्म्य को शिवपुराण में इस प्रकार कहा गया है–

एकाक्षरादकाराख्याद्भगवान्बीजकोऽण्डजः।[36]

एकाक्षरादुकाराख्याद्धरिः परमकारणम्।।

प्रणव के प्रथमाक्षर अकार से जगत् के बीजभूत अण्डज भगवान् ब्रह्मा का बोध होता है। द्वितीय–अक्षर उकार से श्रीहरि विष्णु का बोध होता है। अन्तिम–अक्षर मकार से नीललोहित शिव का बोध होता है। इस ओ3म् अक्षर से बोधित ब्रह्म ही जगत् सर्जक है, उन्हें श्रुतियों में 'ककार' संज्ञा से सम्बोधित किया गया है। 'अ', 'उ' और 'म्' के द्वारा जिन तीनों रूपों का बोध होता है, वस्तुतः वे सब शिवरूप ही हैं–

तस्मादण्डाद्भवो जज्ञे ककाराख्यश्चतुर्मुखः।।[37]

स स्रष्टा सर्वलोकानां स एव त्रिविधः प्रभुः।[38]

एवमोमोमिति प्रोक्तमित्याहुर्यजुषां वराः।।

इस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में सर्वव्याप्त शिवरूप ही हैं। अतः शिव ही परब्रह्म रूप में विद्यमान हैं।

सत्यमानन्दममृतं परं ब्रह्मपरायणम्।।[39]

सन्दर्भ सूची

1. देवीभागवत 1/3/21
2. विष्णुपुराण 3/6/20–24
3. श्वेताश्वतर उपनिषद् 4/12
4. शब्दकल्पद्रुम।। ब्रह्मशब्द।।
5. ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य 1/1/1
6. छान्दोग्योपनिषद् 3/14/1
7. छान्दोग्योपनिषद् 7/1/3
8. ब्रह्मवैवर्त पुराण 17/65
9. भागवतपुराण 1/1/1
10. शिवपुराण वि0सं0 5/10
11. शिवपुराण विद्येश्वर संहिता 5/11
12. शिवपुराण वि0सं0 9/40
13. शिवपुराण वि0सं0 9/36
14. शिवपुराण वि0सं0 9/37
15. शिवपुराण वि0सं0 10/2
16. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/5

17. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/6
18. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/7
19. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/8
20. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/56
21. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/57
22. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/7/40
23. श्रीमद्भगवद्गीता 18/66
24. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/7/42
25. सांख्यकारिका 25
26. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/16
27. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/17
28. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/18
29. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/19
30. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/22
31. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/24
32. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/25
33. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/6/26
34. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/8/3
35. कठोपनिषद् 1/2/15
36. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/8/16
37. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/8/24
38. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/8/25
39. शिवपुराण रुद्र संहिता 1/8/10